BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

बिहार की राजनीति में सुशासन: पाटलिपुत्र और मगध की विरासत

उत्सव कुमार
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा

सारांश

बिहार की राजनीति में सुशासन का विचार ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य को समाहित करता है। प्राचीन मगध साम्राज्य और पाटलिपुत्र, जो चाणक्य और मौर्य साम्राज्य के सुशासन का केंद्र थे, भारतीय प्रशासन और राजनीति की आधारशिला माने जाते हैं। पाटलिपुत्र ने अपने समय में न केवल राजनीतिक और प्रशासनिक उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया, बल्कि न्याय, पारदर्शिता और लोक कल्याण पर आधारित शासन प्रणाली की नींव रखी। आज के बिहार में, सुशासन की अवधारणा ने एक बार फिर महत्व प्राप्त किया है। विशेष रूप से नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार ने कानून-व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास में उल्लेखनीय सुधार किया है। हालांकि, जाति आधारित राजनीति, सामाजिक असमानता और भ्रष्टाचार जैसी चुनौतियां अभी भी सुशासन की राह में बाधा हैं। यह शोध पत्र प्राचीन मगध और पाटलिपुत्र के सुशासन के सिद्धांतों और उनकी आधुनिक प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह बिहार के राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे में उनकी पुनर्प्रासंगिकता पर चर्चा करता है। सुशासन के लिए प्राचीन विरासत और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच सामंजस्य स्थापित करना बिहार को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है।

मूलशब्द- सुशासन, मगध, पाटलिपुत्र, विरासत, सामाजिक असमानता।

प्रस्तावना

बिहार, भारत की सभ्यता और संस्कृति का एक प्राचीन केंद्र, अपने गौरवशाली अतीत और राजनीतिक योगदान के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। प्राचीन मगध साम्राज्य और उसकी राजधानी पाटलिपुत्र न केवल शक्ति और प्रशासन के केंद्र थे, बल्कि सुशासन की परंपरा के प्रतीक भी थे।[i] मौर्य और गुप्त जैसे साम्राज्यों के अधीन पाटलिपुत्र ने कुशल प्रशासन, न्यायपूर्ण व्यवस्था और जनकल्याणकारी नीतियों की मिसाल प्रस्तुत की। चाणक्य के अर्थशास्त्र ने शासन के जिन सिद्धांतों को प्रतिपादित किया, वे आज भी प्रासंगिक माने जाते हैं। समय के साथ, बिहार ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक बदलावों का अनुभव किया। मध्यकालीन और औपनिवेशिक शासन से लेकर स्वतंत्रता के बाद के दौर तक, बिहार का प्रशासनिक और राजनीतिक ढांचा कई उतार-चढ़ावों से गुजरा। आधुनिक बिहार में सुशासन की अवधारणा विशेष रूप से तब उभरी जब सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों और नेतृत्व ने इसे प्राथमिकता दी।[ii] 21वीं सदी में, यह अवधारणा कानून-व्यवस्था में सुधार, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास, और सामाजिक कल्याण पर आधारित नई दिशा ले रही है। इस शोध पत्र में, हम प्राचीन मगध और पाटलिपुत्र की सुशासन परंपरा और उनके आधुनिक बिहार की राजनीति में प्रभाव का विश्लेषण करेंगे। साथ ही, वर्तमान राजनीतिक चुनौतियों और प्राचीन सिद्धांतों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की संभावनाओं का अन्वेषण करेंगे। यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि कैसे बिहार अपने ऐतिहासिक मूल्यों को अपनाकर सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

पाटलिपुत्र और मगध की सुशासन परंपरा

पाटलिपुत्र और मगध भारतीय इतिहास में सुशासन की परंपरा के प्रतीक हैं। मगध साम्राज्य, जो महाजनपद काल में शक्तिशाली राज्यों में से एक था, ने प्रशासनिक उत्कृष्टता और राजनीतिक स्थिरता के आदर्श प्रस्तुत किए। चंद्रगुप्त

@2025 Bihar Shodh Samaagam

मौर्य और सम्राट अशोक जैसे शासकों के कुशल नेतृत्व में मगध ने न केवल विशाल साम्राज्य स्थापित किया, बल्कि सुशासन के ऐसे सिद्धांतों को लागू किया, जो जनता के कल्याण पर आधारित थे।[iii]

मगध साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा

मौर्य काल में मगध साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा अत्यंत संगठित और कुशल था। चाणक्य द्वारा रचित *अर्थशास्त्र* ने शासन के लिए विस्तृत सिद्धांत दिए। इन सिद्धांतों में आर्थिक प्रबंधन, सैन्य संगठन, न्याय प्रणाली, और कराधान पर विशेष ध्यान दिया गया।[iv]

- **केंद्रीकृत प्रशासन**: मौर्य शासकों ने केंद्रीकृत प्रशासन प्रणाली लागू की, जिसमें राजा सर्वोच्च था और उसे विभिन्न मंत्रियों की सहायता प्राप्त थी।
- **जनकल्याण पर ध्यान**: प्रशासनिक नीतियों में सार्वजनिक सुविधाओं, सिंचाई व्यवस्था और व्यापार के विस्तार को प्राथमिकता दी गई।
- **न्याय व्यवस्था**: मौर्य साम्राज्य में न्याय प्रणाली सुदृढ़ थी। सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों के माध्यम से न्याय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांतों को प्रसारित किया।

पाटलिपुत्र: सुशासन का केंद्र

पाटलिपुत्र, जो मगध साम्राज्य की राजधानी थी, अपने समय का सबसे उन्नत और सुव्यवस्थित शहर था। इसे राजनीतिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक उत्कृष्टता का केंद्र माना जाता था।

- **नगर नियोजन और बुनियादी ढांचा**: पाटलिपुत्र का नगर नियोजन अद्वितीय था। इसमें चौड़ी सड़कों, भव्य भवनों और जल निकासी व्यवस्था की विशेष व्यवस्था थी।
- **व्यापार और अर्थव्यवस्था**: गंगा और सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र व्यापार का प्रमुख केंद्र था। यहां से उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच व्यापारिक मार्ग जुड़े हुए थे।
- **लोक कल्याणकारी नीतियां**: पाटलिपुत्र में प्रशासन ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को प्राथमिकता दी। सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म और अहिंसा के सिद्धांतों ने जनता के बीच सामंजस्य स्थापित किया।

सम्राट अशोक और सुशासन

अशोक का शासन सुशासन की परंपरा का स्वर्ण युग माना जाता है। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा और जनकल्याण को प्राथमिकता दी। उन्होंने धर्म शिलालेखों के माध्यम से जनता को नैतिक जीवन जीने और प्रशासनिक सुधारों का पालन करने के लिए प्रेरित किया।[v]

- **धर्म और नैतिकता**: अशोक ने धार्मिक सहिष्णुता, सत्य, दया और अहिंसा को शासन का मूल आधार बनाया।
- **जनता के प्रति जवाबदेही**: अशोक ने 'धर्ममहामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, जो जनता की समस्याओं को सुनते थे और उनका समाधान करते थे।
- **सार्वजनिक कार्य**: अशोक के शासन में सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, कुंओं की खुदाई, और धर्मशालाओं का निर्माण किया गया।

सुशासन की विरासत

मगध और पाटलिपुत्र की सुशासन परंपरा केवल प्रशासनिक दक्षता तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह नैतिकता, सहिष्णुता और जनकल्याण पर आधारित थी। यह परंपरा भारत के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास को गहराई से प्रभावित

करती है। आज भी, इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता कायम है और बिहार की राजनीति और प्रशासन के लिए प्रेरणा स्रोत है।

प्राचीन से आधुनिक बिहार का संक्रमण

बिहार का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्राचीन भारत के गौरवशाली मगध साम्राज्य और पाटलिपुत्र की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विरासत से प्रारंभ होता है। मगध ने चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, और गुप्त राजाओं के काल में शासन के उत्कृष्ट मॉडल प्रस्तुत किए। लेकिन समय के साथ, यह क्षेत्र सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के विभिन्न चरणों से गुजरा। इन बदलावों ने बिहार को आधुनिक भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया।

1. मध्यकालीन बिहार और क्षेत्रीय राजनीति का उदय

मगध साम्राज्य के पतन के बाद, बिहार क्षेत्रीय राजनीति का केंद्र बन गया।

-पाल और सेन साम्राज्य: बिहार में पाल साम्राज्य ने शिक्षा और बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया। नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षण केंद्र इस काल की प्रमुख उपलब्धियां थीं।

- मध्यकालीन संघर्ष: तुर्कों और अफगानों के आगमन के साथ, बिहार धीरे-धीरे दिल्ली सल्तनत और बाद में मुगल साम्राज्य के अधीन आ गया।

- मुगल काल: बिहार मुगल साम्राज्य के अधीन एक उपेक्षित प्रांत रहा, लेकिन इस दौरान भूमि राजस्व प्रणाली और प्रशासनिक ढांचे की बुनियाद डाली गई।

2. औपनिवेशिक काल: ब्रिटिश शासन में बिहार

18वीं सदी में मुगलों के पतन के बाद, बिहार पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का नियंत्रण स्थापित हुआ। इस काल में बिहार ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से गहरे बदलाव देखे।

- स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था: 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा लागू की गई स्थायी बंदोबस्त प्रणाली ने जमींदारी प्रथा को बढ़ावा दिया। इस व्यवस्था ने किसानों को शोषण का शिकार बनाया और सामाजिक असमानता को बढ़ाया।

- औद्योगिक उपेक्षा: ब्रिटिश शासन के दौरान बिहार के कुटीर उद्योगों और व्यापारिक गतिविधियों को हाशिये पर धकेल दिया गया।

- सामाजिक सुधार आंदोलन: 19वीं सदी में राजेंद्र प्रसाद, स्वामी सहजानंद सरस्वती और अन्य नेताओं ने सामाजिक और राजनीतिक चेतना को बढ़ावा दिया।

3. स्वतंत्रता संग्राम और बिहार का योगदान

स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की भूमिका अविस्मरणीय रही।

- चंपारण सत्याग्रह: महात्मा गांधी ने 1917 में चंपारण में किसानों के शोषण के खिलाफ अपना पहला आंदोलन शुरू किया।

- जेपी आंदोलन: जयप्रकाश नारायण ने स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार और कुशासन के खिलाफ 1970 के दशक में एक बड़ा आंदोलन शुरू किया, जिसने बिहार की राजनीति और सामाजिक चेतना को एक नई दिशा दी।

- राष्ट्रीय नेतृत्व का योगदान: डॉ. राजेंद्र प्रसाद, बिहार के पहले राष्ट्रपति, स्वतंत्रता संग्राम और संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. स्वतंत्रता के बाद बिहार: राजनीतिक और सामाजिक बदलाव

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, बिहार ने राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानता और विकास की धीमी गति का सामना किया।

- केंद्र और राज्य का असंतुलन: भूमि सुधार, औद्योगिक विकास और सामाजिक समानता की चुनौतियों का सामना करते हुए बिहार धीरे-धीरे एक पिछड़े राज्य के रूप में उभरा।
- जाति आधारित राजनीति: 1960 के दशक से जाति आधारित राजनीति का उदय हुआ, जिसने शासन और विकास को गहराई से प्रभावित किया।
- विकासशील योजनाओं की कमी: शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में सुधार की धीमी गति ने राज्य को विकासशील राज्यों से पीछे छोड़ दिया।

5. 21वीं सदी में सुशासन की अवधारणा का उदय

2005 के बाद बिहार में प्रशासन और राजनीति में बदलाव देखा गया।
- नीतीश कुमार का शासन: इस दौरान कानून व्यवस्था में सुधार, महिलाओं के लिए आरक्षण, शिक्षा में वृद्धि, और बुनियादी ढांचे के विकास जैसे कदम उठाए गए।
- सामाजिक कल्याण योजनाएं: साइकिल योजना, छात्रवृत्ति और महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं ने सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया।
- विकास की चुनौतियां: हालांकि, भ्रष्टाचार, जातिवाद और बेरोजगारी जैसी समस्याएं अभी भी बड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं।

6. संक्रमण की विरासत और भविष्य

बिहार का प्राचीन से आधुनिक संक्रमण न केवल प्रशासनिक ढांचे में बदलाव का प्रतीक है, बल्कि यह राज्य की राजनीतिक चेतना, सामाजिक संघर्ष और विकास की यात्रा को भी दर्शाता है।
- प्राचीन मगध की सुशासन परंपरा से सीख लेकर बिहार अपने वर्तमान प्रशासनिक और राजनीतिक ढांचे को मजबूत कर सकता है।
- ऐतिहासिक मूल्यों और आधुनिक तकनीकी साधनों का समावेश बिहार को विकास की एक नई दिशा प्रदान कर सकता है।

बिहार की समकालीन राजनीति में सुशासन

बिहार की समकालीन राजनीति में "सुशासन" एक प्रमुख अवधारणा बन गई है। ऐतिहासिक रूप से बिहार प्राचीन काल में प्रशासनिक और सांस्कृतिक उत्कृष्टता का केंद्र रहा है, लेकिन स्वतंत्रता के बाद के दशकों में राज्य ने राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, और विकास के धीमे कदमों का सामना किया। 21वीं सदी में सुशासन का विचार बिहार की राजनीति में विशेष रूप से चर्चा में आया, जब राज्य ने प्रशासन, सामाजिक कल्याण, और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए कई प्रयास किए।

सुशासन का अर्थ और महत्व

सुशासन का अर्थ प्रशासनिक व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही, दक्षता, और जनता की भलाई को प्राथमिकता देना है। यह विचार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकतांत्रिक शासन की पहचान माना जाता है और भारत जैसे देश में इसकी आवश्यकता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। बिहार, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े हुए राज्यों में गिना जाता है, के लिए सुशासन विकास का महत्वपूर्ण साधन है।

बिहार की राजनीति में सुशासन का उदय

बिहार की राजनीति में सुशासन का मुद्दा विशेष रूप से 2005 के बाद उभरा। नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य ने कानून-व्यवस्था में सुधार और विकास पर आधारित राजनीति की शुरुआत की। इससे पहले के दशकों में राज्य जातिवादी राजनीति, भ्रष्टाचार, और कानून-व्यवस्था की समस्याओं से जूझ रहा था।

समकालीन बिहार में सुशासन के प्रमुख आयाम

1. कानून-व्यवस्था में सुधार

बिहार में 1990 के दशक को अक्सर "जंगलराज" के नाम से जाना जाता था, जिसमें कानून-व्यवस्था की स्थिति बेहद खराब थी।

- 2005 के बाद, पुलिस सुधार और प्रशासनिक सख्ती के जरिए अपराध दर में कमी लाई गई।
- महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई पहल की गईं, जिसमें महिला हेल्पलाइन और महिला थानों की स्थापना शामिल है।
- सड़कों पर पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाई गई और अपराधियों के खिलाफ तेजी से कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की गई।

2. महिलाओं का सशक्तिकरण

बिहार में महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी गई।

-आरक्षण: पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को 50% आरक्षण दिया गया।

-साइकिल योजना: छात्राओं को स्कूल जाने के लिए मुफ्त साइकिल देने की योजना शुरू की गई, जिसने बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

-किशोरी सशक्तिकरण योजना: किशोरियों के स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम चलाए गए।

3. शिक्षा में सुधार

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार बिहार की समकालीन राजनीति में एक महत्वपूर्ण पहल है।

- सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ाने के लिए मध्याह्न भोजन योजना (मिड-डे मील) को सख्ती से लागू किया गया।
- स्कूलों में शिक्षक नियुक्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता लाई गई।
- उच्च शिक्षा के लिए लड़कियों और गरीब वर्गों के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं शुरू की गईं।

4. बुनियादी ढांचे का विकास

बिहार ने पिछले दो दशकों में बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

- सड़क और पुल निर्माण: राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों का विस्तार किया गया और गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ने का प्रयास किया गया।
- विद्युतीकरण: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति में सुधार किया गया।
- सिंचाई परियोजनाएं: कृषि क्षेत्र के विकास के लिए नहरों और सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया गया।

5. सामाजिक कल्याण योजनाएं

बिहार की समकालीन राजनीति में गरीब और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए कई योजनाएं लागू की गईं।

- जननी सुरक्षा योजना: गर्भवती महिलाओं को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई।

- पशुपालन और रोजगार योजनाएं: ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने और पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी आधारित योजनाएं शुरू की गईं।

- भोजन और आवास: सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) को सशक्त बनाया गया और गरीबों के लिए आवास योजनाएं चलाई गईं।

6. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण

बिहार में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग बढ़ाया गया।

- भूमि रिकॉर्ड और अन्य सरकारी सेवाओं को डिजिटाइज किया गया।

- सरकारी टेंडरों और नीलामियों को ऑनलाइन किया गया।

- सूचना का अधिकार (RTI) के प्रभावी कार्यान्वयन के जरिए पारदर्शिता सुनिश्चित की गई।

आधुनिक बिहार में मगध और पाटलिपुत्र की विरासत की प्रासंगिकता

मगध और पाटलिपुत्र की ऐतिहासिक विरासत आधुनिक बिहार के लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्राचीन मगध में स्थापित सुशासन, न्याय प्रणाली, और जनकल्याणकारी नीतियां आज भी प्रासंगिक हैं। पाटलिपुत्र का नगर नियोजन, आर्थिक विकास, और सांस्कृतिक समृद्धि आधुनिक शहरी विकास और प्रशासनिक सुधारों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।[vi] सम्राट अशोक की अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता की नीतियां आज के सामाजिक सद्भाव और समावेशी विकास में योगदान करती हैं। आधुनिक बिहार में इन मूल्यों को आत्मसात कर भ्रष्टाचार, जातिवाद और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। मगध की यह गौरवशाली विरासत राज्य को विकास और सुशासन की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

प्राचीन शासन के सिद्धांतों से आधुनिक सबक

प्राचीन भारत, विशेषकर मगध और पाटलिपुत्र जैसे ऐतिहासिक केंद्रों में, शासन के ऐसे सिद्धांत विकसित हुए जो आज भी प्रासंगिक हैं। चाणक्य के अर्थशास्त्र और सम्राट अशोक के प्रशासनिक आदर्श, सुशासन के लिए मार्गदर्शक हैं। इन सिद्धांतों से आधुनिक शासन के लिए कई सबक लिए जा सकते हैं।

1. *जनकल्याण पर आधारित शासन:* प्राचीन शासन में जनता की भलाई को प्राथमिकता दी गई। आज के नेताओं को इसे अपनाते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
2. *धार्मिक सहिष्णुता और नैतिकता:* अशोक द्वारा प्रसारित अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता की नीति सामाजिक समरसता के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। यह वर्तमान समय में सांप्रदायिक तनावों को कम करने में मदद कर सकती है।
3. *केंद्रीकृत लेकिन जवाबदेह प्रशासन:* मौर्य काल के केंद्रीकृत प्रशासन ने कुशल शासन का उदाहरण प्रस्तुत किया। आज, तकनीक और डिजिटलीकरण के माध्यम से पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाई जा सकती है।
4. *पर्यावरण संरक्षण:* अशोक द्वारा वृक्षारोपण और जल संरक्षण जैसी योजनाएं आधुनिक समय में टिकाऊ विकास के लिए प्रेरणा देती हैं।
5. *आर्थिक प्रबंधन:* प्राचीन व्यापार और कर प्रणाली से यह सीखा जा सकता है कि अर्थव्यवस्था को कैसे संगठित और मजबूत किया जाए।

प्राचीन शासन के सिद्धांत न केवल ऐतिहासिक धरोहर हैं, बल्कि आज के शासन को प्रभावी और समावेशी बनाने के लिए प्रेरक साधन भी हैं।

बिहार की राजनीति में ऐतिहासिक मूल्यों का महत्व

बिहार की राजनीति में ऐतिहासिक मूल्यों का गहरा महत्व है, क्योंकि राज्य का राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्राचीन काल से ही शासकीय सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों से प्रभावित रहा है। मगध और पाटलिपुत्र की राजनीतिक व्यवस्था में न्याय, धर्म, और जनकल्याण की नीतियां स्थापित थीं, जो आज भी बिहार की राजनीति में प्रासंगिक हैं। सम्राट अशोक की अहिंसा और समावेशी नीतियां, चाणक्य के शासन के सिद्धांत, और पाटलिपुत्र का प्रशासनिक मॉडल राज्य के विकास और सुशासन के मार्गदर्शक हैं। आधुनिक बिहार की राजनीति में इन ऐतिहासिक मूल्यों का प्रभाव देखा जा सकता है। सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, और समानता के सिद्धांत आज के राजनीतिक विमर्श में अहम हैं। उदाहरण स्वरूप, समावेशी समाज की परिकल्पना और सामाजिक-आर्थिक समता की दिशा में की जा रही योजनाएं बिहार की प्राचीन राजनीति के आदर्शों को पुनः जीवन्त करती हैं। बिहार की राजनीति में इन ऐतिहासिक मूल्यों को आत्मसात करना राज्य को विकास, सुशासन, और सामाजिक सद्भाव की ओर मार्गदर्शन कर सकता है, जो आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।[vii]

बिहार की राजनीतिक पहचान में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का योगदान

बिहार, जो प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्रों में से एक रहा है, आज भी अपनी ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक धरोहर से गहरे जुड़े हुए हैं। बिहार की राजनीतिक पहचान में इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का अहम योगदान है, जो राज्य की नीति, प्रशासन और समाज की संरचना को आकार देता है। प्राचीन काल में, बिहार का क्षेत्र मगध साम्राज्य के रूप में अत्यधिक प्रभावशाली था, जहां पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) जैसे महान नगरों का विकास हुआ। मगध साम्राज्य में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के नेतृत्व में प्रशासन और सुशासन के सिद्धांत स्थापित हुए, जिनकी आज भी राजनीतिक संदर्भ में प्रासंगिकता है। सम्राट अशोक की नीति ने न केवल शांति और अहिंसा को बढ़ावा दिया, बल्कि उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक न्याय की अवधारणा को भी मजबूत किया।[viii] इन सिद्धांतों का प्रभाव बिहार की आज की राजनीति पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहां सामाजिक न्याय और समावेशी विकास पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, बिहार के धार्मिक और सांस्कृतिक योगदान ने राज्य की राजनीतिक पहचान को भी प्रभावित किया। बिहार में बौद्ध धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति हुई, और नालंदा विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के केंद्रों ने बौद्धिक वर्चस्व को स्थापित किया। आज भी बिहार के लोगों के सांस्कृतिक मूल्य, जैसे धर्मनिरपेक्षता, सद्भाव और समानता, राज्य की राजनीति को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधुनिक बिहार में भी ऐतिहासिक धरोहर की पहचान ने राज्य की राजनीति में बदलाव की दिशा तय की है। स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के योगदान ने उसे राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। महान नेता जैसे डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण और अन्य सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों ने बिहार को एक नई राजनीतिक पहचान दी। इन नेताओं ने राज्य में समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और जनकल्याण के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया, जो आज भी बिहार की राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा हैं।[ix] बिहार की राजनीति में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का योगदान राज्य की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करता है, बल्कि राज्य के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण को भी आकार देता है, जिससे बिहार की राजनीति में एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।

बिहार में सुशासन का भविष्य

बिहार में सुशासन का भविष्य आशाजनक दिखता है, यदि प्रशासनिक सुधारों, शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचे के विकास पर निरंतर ध्यान दिया जाए। राज्य में कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार उन्मूलन और महिलाओं के सशक्तिकरण जैसी पहलें प्रभावी रही हैं।[x] भविष्य में, यदि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर औद्योगिकीकरण, कृषि सुधार और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देती हैं, तो बिहार विकास की ओर तेजी से बढ़ सकता है। इसके अलावा, सामाजिक समरसता और समाज में समानता सुनिश्चित करने के लिए ऐतिहासिक मूल्यों का पालन महत्वपूर्ण होगा। सुशासन के इस मार्ग पर बिहार अपने लक्ष्य को हासिल कर सकता है।

सतत विकास के लिए रणनीतियां

सतत विकास के लिए प्रभावी रणनीतियों का निर्माण जरूरी है ताकि पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं का संतुलन बनाए रखा जा सके। सबसे पहले, **हरित ऊर्जा** का उपयोग बढ़ाना, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में सहायक होगा। **कृषि में सुधार** के लिए जैविक खेती और जलवायु अनुकूल तकनीकों का अपनाना आवश्यक है। **शहरीकरण में सतत विकास** सुनिश्चित करने के लिए स्मार्ट सिटी योजनाओं का क्रियान्वयन, जिसमें सार्वजनिक परिवहन और ऊर्जा बचत को प्राथमिकता दी जाए। **शिक्षा और कौशल विकास** पर ध्यान देकर मानव संसाधन को सशक्त किया जा सकता है, जिससे रोजगार के अवसर और सामाजिक समावेश बढ़ेंगे। **जल और वन संरक्षण** के लिए नीतियों को मजबूत करना, साथ ही **आधुनिक प्रौद्योगिकी** का उपयोग सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करेगा। इन रणनीतियों को अपनाकर, हम सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं।

युवा और नागरिक समाज की भूमिका

युवाओं को परिवर्तन के कारक के रूप में प्रोत्साहित करना समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाता है। युवा शक्ति न केवल नवाचार और ऊर्जा का स्रोत होती है, बल्कि वे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। शिक्षा, तकनीकी कौशल और सामाजिक सक्रियता के माध्यम से युवाओं को समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सहभागी शासन और जागरूक नागरिकों की भूमिका भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। नागरिक समाज, सरकार और अन्य संस्थाओं के बीच सक्रिय संवाद और सहयोग से समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत किया जा सकता है। जागरूक नागरिक शासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और न्याय की मांग करते हैं, जो समग्र विकास में योगदान देता है। सहभागी शासन से राज्य और समाज के बीच एक मजबूत और न्यायपूर्ण संबंध स्थापित होता है, जो समावेशी और सतत विकास की दिशा में अग्रसर करता है।

तकनीकी नवाचार और प्रशासन में डिजिटलीकरण

तकनीकी नवाचार और प्रशासन में डिजिटलीकरण ने शासन व्यवस्था को पारदर्शी, कुशल और उत्तरदायी बनाया है। ई-गवर्नेंस के माध्यम से सरकारी सेवाओं की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया है, जिससे समय की बचत, भ्रष्टाचार में कमी और नागरिकों को अधिक सुलभ सेवाएं मिल रही हैं। बिहार में भी तकनीकी पहलों को सफलता मिली है। **बिहार राज्य ई-गवर्नेंस मिशन** के तहत कई महत्वपूर्ण योजनाएं लागू की गई हैं, जैसे **बिहार शिक्षा परियोजना** जिसमें विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इसके अलावा, **बिहार का भूमि रिकॉर्ड डिजिटलीकरण** योजना ने भूमि संबंधी विवादों में पारदर्शिता सुनिश्चित की है। **बिहार सरकार की मोबाइल एप्स** जैसे बिहार पुलिस एप और बिहार स्टेट सर्विस डिलीवरी गेटवे ने नागरिकों को प्रशासनिक सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान की है। **मूल्यांकन और पेंशन वितरण प्रणाली** को भी डिजिटलीकरण के माध्यम से सुव्यवस्थित किया गया है, जिससे लाभार्थियों को बिना किसी मध्यस्थता के सीधा लाभ मिल रहा है। इन पहलों से बिहार में प्रशासनिक सुधार और विकास की दिशा में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं।

निष्कर्ष

मगध और पाटलिपुत्र की सुशासन परंपरा और आधुनिक बिहार की राजनीति के बीच एक गहरा संबंध है, जो ऐतिहासिक मूल्य और प्रशासनिक सिद्धांतों से प्रेरित है। प्राचीन बिहार, विशेष रूप से मगध साम्राज्य, में स्थापित प्रशासनिक संरचनाओं और शासन के सिद्धांतों ने एक मजबूत शासन व्यवस्था की नींव रखी थी। सम्राट अशोक और चाणक्य जैसे महान शासकों के नेतृत्व में, मगध और पाटलिपुत्र ने न केवल प्रशासनिक कुशलता, बल्कि न्याय, अहिंसा, और सामाजिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। इन सिद्धांतों का प्रभाव आज भी बिहार की राजनीति में स्पष्ट रूप से देखा जाता है, विशेष रूप से राज्य में सुशासन, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की नीतियों में। आधुनिक बिहार की राजनीति में भी ये ऐतिहासिक सिद्धांत प्रासंगिक हैं। राज्य में विभिन्न सुधारों, जैसे कि महिलाओं का सशक्तिकरण, शिक्षा में सुधार, और कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में प्रगति, बिहार के ऐतिहासिक मूल्यों की पुनरावृत्ति करते हैं। सुशासन का विचार बिहार में एक नई दिशा लेकर आया है, जो ना केवल प्रशासनिक सुधारों को लागू करने की दिशा में है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समता के सिद्धांतों को भी केंद्र में रखता है। बिहार के राजनीतिक नेतृत्व ने प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा लेते हुए राज्य के विकास को प्राथमिकता दी है, जो उनके नेतृत्व और नीति निर्माण की सफलता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। सुशासन के लिए प्राचीन सिद्धांतों और आधुनिक दृष्टिकोण का सामंजस्य स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' में वर्णित न्याय, शासन, और जनता के कल्याण की अवधारणाएं आज के समय में प्रशासनिक सुधारों के मूल सिद्धांत बन सकती हैं। सम्राट अशोक का धम्म नीति, जो अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक न्याय पर आधारित थी, आज भी बिहार के विकास मॉडल में योगदान दे सकती है। दूसरी ओर, आधुनिक दृष्टिकोण में तकनीकी नवाचार, ई-गवर्नेंस, और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी जाती है, जो प्रशासनिक प्रक्रिया को और अधिक सुलभ और उत्तरदायी बनाता है। इन दोनों दृष्टिकोणों

का संयोजन बिहार को एक नई दिशा और विकास की ऊँचाइयों तक ले जा सकता है। बिहार के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक भविष्य को लेकर आशावादी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। राज्य में अब तक हुए प्रशासनिक सुधारों, कानून-व्यवस्था में सुधार, और विकासात्मक योजनाओं के परिणाम स्वरूप बिहार की स्थिति में सुधार हुआ है। राज्य की ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक धरोहर को ध्यान में रखते हुए, राज्य को और अधिक समृद्ध बनाने की दिशा में राज्य सरकार और नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। आधुनिक बिहार, जो अब विकास, सामाजिक न्याय, और समावेशी नीति के तहत अपनी पहचान बना रहा है, अपने ऐतिहासिक गौरव और प्रशासनिक परंपराओं के साथ एक मजबूत भविष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। अंततः, बिहार की राजनीति में सुशासन के सिद्धांतों का पालन और उनका सामंजस्यपूर्ण संयोजन न केवल राज्य के विकास को सुनिश्चित करेगा, बल्कि यह बिहार को एक आदर्श राज्य के रूप में स्थापित करने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा, जहां सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समरसता का वास्तविक रूप देखने को मिलेगा।

संदर्भ सूची

[i] Antonova, K., G.B. Levin and G. Kotovsky, 'A History of India', vol. 1, Progress Publishers, Moscow, 1979, pp. 59-115.

[ii] Mukherji, Arnab & Anjan Mukherji, 'Bihar: What Went Wrong? And What Changed?' National Institute of Public Finance and Policy, New Delhi, 2012.

[iii] D K, Dr. Radhamma. 'Ashoka's Edicts: A Source of Ancient Indian Governance', Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, vol. 1, no. 8, 2017.

[iv] Choudhary, A. S. 'Welfare state in Kautilya's Arthashastra: An Analytical Study' MDU Press, vol 20, 2021.

[v] Strong, John.S. 'The Legend of King Asoka: A Study and Translation of the Asokavadana' , Motilal Banarsidass Publishers Pvt. Ltd, vol 6, Delhi, 1989.

[vi] Kumar, Dr. Arun. 'Town Planning and Decline of Patliputra: A Case Study', Studies in Indian Place Names, vol 40, No. 60, 2020.

[vii]Imran, Mojib. 'Kautilyan Principles Still Relevant, Follow it to Address Contemporary Challenges'. 6th BiharTimes Conclave 2024 published on 21 Nov 2024.

[viii] D K, Dr. Radhamma. 'Ashoka's Edicts: A Source of Ancient Indian Governance', Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, vol. 1, no. 8, 2017.

[ix] Mishra, Sharad. *Jayaprakash Narayan and His Contribution to Social Movements in India. Research J. Humanities and Social Sciences. 3(2): April-June, 2012, 282-286.*

[x] कुमार, संजय. 'बिहार की चुनावी राजनीति: जाति-वर्ग का समीकरण (1990-2015)'. फारवर्ड प्रेस. नई दिल्ली. 2019.